

गैरिणी वल्लिपिणी



# मूल गोसाईं-चरित

( गोस्वामी तुलसीदासजीका जीवन-चरित्र )



सोरठा—संतन कहेउ बुझाय, मूलचरित पुनि भाषिये ।  
 अति संछेप सोहाय, कहौं सुनिय नित पाठ हित ॥ १ ॥  
 चरित गोसाईं उदार, बरनि सकैं न हें सहसफनि ।  
 हौं मतिमंद गंवार, किमि बरनौं तुलसी-सुजस ॥ २ ॥

## तोटक

ऋषि आदि कबीखर ग्याननिधी । अवतरित भये जनु आपु विधी ॥  
 सत कोटि वपानेउ रामकथा । तिहुं लोकमें वांटेउ संभु जथा ॥  
 दस स्यंदन वेद दसांगमयं । स्तुति त्रैविधि तीनिउ रानिजयं ॥  
 श्रीराम प्रनव स्तुति तत्त्व परं । निज अंसनि जुत नरदेह धरं ॥  
 इमि कीन्ह प्रबंध मुनीस जथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र तथा ॥  
 हनुमंत प्रनव प्रिय प्राण रसै । परतत्त्व रसै तिसु सीस लर्मै ॥  
 यहि भांति परात्पर भाव लिये । सुचि राम परत्व वपान किये ॥  
 मुनिराज ल्ये अद्भुत रचना । कपिराज सौं कीन्ह इहै जँचना ॥  
 यह गुप्त रहस्य है गोइ धरैं । त्रिनती हमरी न प्रकास करैं ॥  
 तब अंजनि-नंदन साप दियौ । हंसि कै मुनि धारन सीस कियौ ॥

दोहा—सहनसीलता मुनि निरपि, पवनकुमार सुजान ।

बहु विधि मुनिहिं प्रसंसि पुनि, दिये अभय वरदान ॥ १ ॥

कलिकाल मैं लैहहु जन्म जवै । कलि ते तव त्रान सदा करिवै ॥  
 तेहि साप के कारन आदि कवी । तमपुंज निवारन हेतु रवी ॥  
 उदये हुलसी उदघाटिहि ते । सुर संत सरोरुह से त्रिकसे ॥  
 सरवार सुदेस के त्रिप्र बड़े । सुचिगोत परासर टेक कड़े ॥  
 सुम थान पतेजि रहे पुरषे । तेहिते कुल नाम पड़ो झुरषे ॥  
 जमुना तट दून को पुरवा । बसते सत्र जातिन कौ कुरवा ॥  
 सुकृती सतपात्र सुधी मपिया । रजियापुर राजगुरु मुपिया ॥  
 तिनके घर द्वादस मास परे । जब कर्क के जीव हिमांसु चरे ॥  
 कुज सतम अट्टम भानु तनै । अभिहित सुठि सुंदर सांझ समै ॥  
 दो०—पंद्रह सै चौवन विपै, कालिंदी के तीर ।

सावन सुक्का सत्तिमी, तुलसी धरेउ सरोर ॥ २ ॥

सुत जन्म बघाव लयो बजने । सजने छजने रजने गजने ॥  
 एक दासि कही तेहि औसर में । काहि देव बुलाहट है घर में ॥  
 सिसु जनमत रंचक रोओ नही । सो तो बोलेउरामगिरेउज्योमहीं ॥  
 अब देषिय दंत बतीसी जमी । नहिं पोल्हइ पातिमै नेक कमी ॥  
 जस वालक पांच को देषियजू । तस जन्मतु आ निज लेषियजू ॥  
 अब बूढ़ि भई भरि जन्म नहीं । सिसु ऐसो मैं देषिउ तात कहीं ॥  
 महरी कहती सुनि संष धुनी । जवहीं सो समय सिसुनार छुनी ॥  
 जो लोगाइ हतीं कपतीं बकतीं । कोउ राकस जामेउ कहि झषतीं ॥  
 महाराज चलिय अब वेगि घरे । समुझाइ प्रसूति को ताप हरे ॥

दो०—उठे तुरत भृगुवंसमनि, सुनत चेरि के वैन ।  
ठाढ़ प्रसूती द्वार भे, पूरित जल सों नैन ॥ ३ ॥

छंद—पूरितसल्लिलदृगनिरपि सिसुपरिताप जुतमानसभये ।  
मन महं पुराकृत पापको परिनाम गुन बाहिर गये ॥  
तत्र जुरै सत्र हित मित्त बांधव गनक आदि प्रसिद्ध जे ।  
लागे त्रिचारन का करिय नवजात सिसुकहं कहहिं ते ॥ १ ॥

दो०—पंचन यह निरनय किये, तीन दिवस पस्चात ।  
जियत रहै सिसु तव करिअ, लौकिक त्रैदिक वात ॥ ४ ॥

दसमी पर लागेउ ग्यारस ज्यों । घरि आइक राति गई जव त्यों ॥  
हुलसी प्रिय दासि सों लागि कहै । सपि प्रान-पपेरू उड़ान चहै ॥  
अब हीं सिसु लै गवनहु हरिपुर । बसते जंह तोरिउ सास ससुर ॥  
तहं जोइत्रि पालत्रि मोर लला । हरिजू करिहैं सपि तोर भला ॥  
नहिं तो ध्रुव जानहु मोरे मुये । सिसु फेंकि पंवारहिंगे भकुये ॥  
सपि जान न पावै कोऊ ब्रतियां । चलि जायहु मग रतियां रतियां ॥  
तेहि गोद दियो सिसु डारस दै । निज भूपन दै दियो ताहि पटै ॥  
चुपचाप चली सो गई सिसु लै । हुलसी उर सूनु त्रियोग फत्रै ॥  
गोहराइ रमेस महेश विधी । विनती करि राषेत्रि मोर निधी ॥

दो०—ब्रह्ममुहूर्त एकादसी, हुलसी तजेउ सरीर ।  
होत प्रात अन्त्येष्टि हित, लेंगे जमुना तीर ॥ ५ ॥

घरि पांचइ त्रार चढ़ै मुनिआ । निज सासके पायं गही चुनिआ ॥  
सत्र हाल हवाल ब्रताय चली । सुनि सास कहीं त्रहु कीन्ह भली ॥  
घर माहिं कलोर को दूध पिआ । विनु माय को है सिसु लेसि जिआ ॥

तंह पार्लन सो लिंगि नेह भरै । जेहि ते सिसु रीझइ सोइ करै ॥  
 धहि भाति सों पैसठ मास गये । सिसु बोलन डोलन जोग भये ॥  
 चुनिआ सुरलोक सिधार गई । डस्यो पन्नग ज्यों सो कोरार गई ॥  
 तब राजगुरु को कहाव गयो । सुनि कै तिनहूं दुप मानि कइयो ॥  
 हम का करिवै अस बालक लै । जेहि पालं जो तासु करै सोइ छै ॥  
 ज्ञानमेउ सुत मोर अभागो महीं । सो जिये वा मरै मोहिं सोच नहीं ॥  
 दो०—बेनी पूरब जनम कर, करमत्रिपाक प्रचंड ।

बिना भोगाये टरत नहिं, यह सिद्धांत अपंड ॥ ६ ॥

छं०—सिद्धांत अटल अपंड भरि ब्रह्मंड व्यापित सत जथा ।

जहं मुनिवरन की यह दसा तहं पामरन की का कथा ॥

निज छति विचारिन राप कोऊ दया दग पाछे दियो ।

डोलत सो बालक द्वारद्वार बिलोकितेहि विहरत हियो ॥ २ ॥

सो०—बालक दसा निहारि, गौरा माई जगजननि ।

द्विज तिय रूप संवारि, नितहिं पवाजावहि असन ॥ ३ ॥

दुइ बत्सर बीतेउ याहि रसे । पुर लोगन कौतुक देषि कसे ॥

जिन जोह जसूस पै आय जकै । परिचय द्विज नारि न पाइ थकै ॥

चर नारि हती तहं सो परपी । जब माय षवाय लला टरपी ॥

परि पांय करी हठ जान न दे । जगदंब अदस्य भई तब ते ॥

सिव जार्नि प्रिया व्रत हेतु हियो । जन लौकिक सुलभ उपाय कियो ॥

प्रिय सिष्य अनंतानंद हते । नरहर्य्यानंद सुनाम छते ॥

बसे रामसुसैल कुटी करिके । तल्लीन दसा अति प्रिय हरि के ॥

तिन कहं भव दरसन आपु दिये । उपदेसहुं दै कृतकृत्य किये ॥

प्रिय मानस रामचरित्र कहे । पठये तंह जंह द्विजपुत्र रहे ॥

दो०—लै बालक गवनहु अवध, विधिवत मंत्र सुनायं ।

मम भापित रघुपति कथा, ताहि प्रबोधहु जाय ॥ ७ ॥

जत्र उघरहि अंतर दगनि, तत्र सो कहिहि बनाय ।

लरिकाई को पैरिबो, आगे होत सहाय ॥ ८ ॥

सो०—संमु वचन गंभीर, सुनि मुनि अति पुलकित भये ।

सुमिरि राम रघुबीर, तुरत चले हरिपुर तके ॥ ४ ॥

पुर हेरि के बालक गोद लिये । द्विजपुत्र अनाथ सनाथ किये ॥

कह्यो रामबोला जनि सोच करै । पलिहैं पोसिहैं सब भांति हरै ॥

सो तो जानेउ दीनदयाल हरी । मम हेतु सुसंत को रूप धरी ॥

पुरलोगन केर रजाय लिये । सह बालक संत पयान किये ॥

पहुंचे जत्र औधपुरी नगरे । विचरे पुरबीथिन मां सगरे ॥

पन्द्रह सै इकसठ माघ सुदी । तिथि पंचमि औ भृगुवार उदी ॥

सरजू-तट विप्रन जग्य किये । द्विजबालक कहं उपवीत दिये ॥

सिपये त्रिनु आपुइ सो बरुआ । द्विजमंत्र सवित्रि सुउच्चरुआ ॥

विस्मयजुत पंडित लोग भये । कहे. देषत बालक त्रिग्य ठये ॥

दो०—नरहरि स्वामी तत्र किये, संस्कार विधि पांच ।

राममंत्र दिय जेहि छुटै, चौरासी को नांच ॥ ९ ॥

दस मास रहे मुनिराज तहां । हनुमान सुटील विराज जहां ॥

निज सिप्यहिं विद्या पढ़ाय रहे । अरु पानिनि-सूत्र घोपाय रहे ॥

लघु बालक धारनसक्ति जगी । अनुरक्ति समक्ति दिखान लगी ॥

हरपे गुनग्राम विचार हिये । पद चापत आसिप भूरि दिये ॥

जत्रते जनमेउ तत्रते अबलौं । निज दीन दसा कहिगो गुरुसौं ॥

ठक से रहिगे मुनिं बाल कथा । करुना उरमें उपजाइ व्यथा ॥  
मुनि धार भरे दृग नीर रहे । गुरु सिष्य दसा कत्रि कौन कहे ॥  
समुझाय बुझाय लगाय हिये । कहि भावि भलाइ प्रसांत किये ॥  
हरिप्रिय रितु लाग हेमंत जत्रै । सिप संग लै कौन्ह पयान तत्रै ॥

दो०—कहत कथा इतिहास बहु, आये सूकरपेत ।

संगम सरजू घाघरा, संत जनन सुप देत ॥ १० ॥  
तंहवां पुनि पांचइ वर्ष बसे । तपमें जपमें सब भांति रसे ॥  
जत्र सिष्य सुत्रोध भयो पढ़ि कै । मति जुक्ति प्रबान भई गढ़ि कै ॥  
सुधि आइ महेस सिपावन की । परतत्त्व प्रबंध सुनावन की ॥  
तत्र मानस रामचरित्र कहे । सुनि कै मुनिबालक तत्त्व गहे ॥  
पुनि पुनि मुनि ताहि सुनावत भे । अति गूढ कथा समुझावत भे ॥  
यहि भांति प्रबोधि मुनीस भले । बसुपर्ष लगे सह सिष्य चले ॥  
त्रिल्लाम अनेक किये मग में । जल अन्न को पेल मच्यो जग में ॥  
कतहूं सुकृतिन उपदेश करै । कतहूं दुपिया दुपदाप हरै ॥  
दो०—विचरत विहरत मुदित मन, पहुंचे कासी धाम ।

परम गुरु सुस्थान पर, जाय कौन्ह त्रिल्लाम ॥ ११ ॥  
सुंठि घाट मनोहर पंच पगा । गंगिया कर कौतुक केलि जगा ॥  
पुनि सिद्ध सुपृष्ठ प्रतिष्ठित सो । बहुकाल जतींद्र रहे जु नमो ॥  
तंहवां हते सेप सनातन जू । बपुवृद्ध वरंच जुवा मन जू ॥  
निगमागम पारग ज्योति फत्रै । मुनि सिद्ध तपोधन जान सत्रै ॥  
तिन रीझि गये बटु पै जत्र ही । गुरु खामि सों सुंदर ब्रात कही ॥  
निज सिष्यहिं देख्य मोहिं मुनी । तिसु वृत्ति दुनी नहिं ध्यान धुनी ॥

हीं ताहि पढ़ाउत्र वेद चहूं । अरु आगम दरसन पात छहूं ॥  
इतिहास पुरानरु काव्यकला । अनुभूत अलभ्य प्रतीक फला ॥  
विद्वान महान घनाउत्र जू । सुनि आपु महासुप्र पाउत्र जू ॥

दो०—शाचारज विनती सुनत, पुलकित भे मुनिधीर ।

बटु बुलाय सौंपत भये, पावन गंगातीर ॥ १२ ॥

कछु दिन रहिगे जति प्रवर, पढ़न लगे बटु भास ।

चित्रकूट कहं तत्र गये, लपि सत्र भांति सुपास ॥ १३ ॥

बटु पंद्रह वर्ष तहां रहिकै । पढ़ि साख सत्रै महिकै गहिकै ॥

करिकै गुरु-सेवा सदय तन तै । गत देह क्रिया करि सौ मन तै ॥

चले जनमथलीको त्रिपाद भरे । पहुंचे रजियापुरके वगरे ॥

निज भौन त्रिलोकेउ दूह दहा । कोउ जोवन जोग न लोग रहा ॥

इक भाट वपानेउ ग्राम-कथा । द्विजवंसको नास भयो जु जथा ॥

कशौ जा दिन नाइ से राजगुरु । तत्र त्याग की बोलैउ बात करू ॥

तंह बैठ रह्यो तप तेज धनी । तिन साप दियो गहि नागफनी ॥

पट मास के भीतर राजगुरु । दस वर्ष के भीतर वंस मरू ॥

सुनिकै तुलसी मन सोक छये । करि स्याद्ध जथाविधि पिंड दये ॥

दो०—पुरलोगन अनुरोधते, दियो भवन बनवाय ।

रहन लगे अरु कहत भे, रघुपति-कथा सुहाय ॥ १४ ॥

जमुना पर तीरमों तारिपतो । भरद्वाज सुगोत को त्रिप्र हतो ॥

कतिकी दुतिया कर न्हान लगे । सकुटुम्भ सो आयउ संग सगे ॥

करि मज्जन दान गये तंहवां । हुलसी-सुत वांच कथा जंहवां ॥

छत्रि व्यास त्रिलोकिप्रसन्न भये । सब लोगन बूझि स्वठाम गये ॥

पुनि माधव मास में आय रहे । कर जोरि के सुंदर बात कहे ॥



महराति जवै नगिचाय रहां । सपने जगदंब चैताय रहां ॥  
 सुभ राउर नांव बताय रहां । सब ठांव ठिकान जताय रहां ॥  
 हां हेरत हेरत आयों इतै । मोहिं राषियहाँ अब जाव कितै ॥  
 दो०—सुनत दिनय सोचन लगे, पुनि बोले सकुचाय ।

व्याह वरैया ना चहाँ, अनत पधारिय पाय ॥ १५ ॥

द्विज मानै नहीं धरना धरिक्कै । नहिं पाय पियै समना करिक्कै ॥  
 दुसरे दिन जब खांकार कियो । तब विप्र हठां जलअन्न लियो ॥  
 घर जाय सोथाय के लगन धरें । उपरोहित भेजि प्रसन्न कियो ॥  
 इततै पुरखेगन जोग दिये । सब साज समान बरात किये ॥  
 पंद्रह सै पार तिरासि त्रियै । सुभ जेठ सुदां गुरु तेगस पै ॥  
 अविगति लौं जु फिरां भंवरी । दुल्हा दुल्हा कां परां पंवरी ॥  
 लखनालिळि कोहवर नहिं रसां । वरनायक पंडित सो विहंसां ॥  
 तिसरं दिन मांडवचार भयो । सुचि भगति सो दान दहेज दयो ॥  
 दो०—विदा करा दुल्हा चले, पंडितराज महान ।

आये निज पुर अरु किये, लोकाचार विधान ॥ १६ ॥

पुर नारि जुरां गुरु भौन गई । दुल्हां सुप देषि निहाळ भई ॥  
 दुल्हां सुत देपेउ नारि छटा । सुख इंदु ते श्रुंक्ट कोर हटा ॥  
 मन प्राण प्रियापर वार दिये । जस कौमिक मेनका देषि भये ॥  
 दिन रात सदा रंग राते रहैं । सुप पाते रहैं लखचाते रहैं ॥  
 सर वर्ष पुरस्सर चाव चये । पल ज्यों रसकेलि नें वांत गये ॥  
 नहिं जाने दें आपुन जांव कहैं । पल एक प्रिया विनु चैन नहीं ॥  
 दुपिया जननी सुप देपनको । पितु ग्राम सुआसिनि देपनको ॥

सह बंधु गई चुपके सो सती । वरषासन ग्राम हते जु पती ॥  
जब सांझ समय निज गेह गये । घर सून निहारि ससोच भये ॥  
तब दासि जनायउ सौं करिकै । निज बंधु के संग गई मैकै ॥  
सुनते उठि कै ससुरारि चले । अति प्रेम प्रगाढ़ विसेप पले ॥  
कौनउ विधि ते सरि पार किये । पहुँचे सब सोवत द्वार दिये ॥  
छं०—द्वै द्वार सोवहिं लोग नींद तुराइ गोहराचन लौं ।  
खरचीन्हि द्वार कपाट पोली झमकिभामिनि सगवगै ॥  
बोली त्रिहंसि बानी त्रिमल उपदेस सानी कामिनी ।  
कस बस चले प्रेमांध ज्योनहिं सुधि अंधेरी जामिनी ॥ ३ ॥

दो०—हाड़ मांस को देह मम, तापर जितनी प्रीति ।  
तिसु आधो जो रामप्रति, अवसि मिटिहि भवभीति ॥ १७ ॥

सो०—लाग वचन जिमि वान, तुरत फिरे विरमें न छिन ।  
सोचेउ निज कल्यान, तबचित चढ़ेउजोगुरुकहेउ ॥ ५ ॥

दो०—नरहरि कंचन कामिनी, रहिये इनते दूर ।  
जौ चाहिय कल्यान निज, राम दरस भरपूर ॥ १८ ॥

उठि दौरि मनावन सार गयो । पिछुआये रथौ जब भोर भयो ॥  
नहिं पेरे फिरे फिरि आयो घरे । भगिनी निज मूर्छित देख्यो परे ॥  
मुर्छा जु हठी उठि बोली सती । पिय को उपदेसन आइ हती ॥  
पिय मोर पयान कियो वन को । हौं प्रान पठाउं तजौं तनु को ॥  
कहिकै अस सो निज देह तजी । सुरलोक गई पतिधर्मध्वजी ॥  
सत पंद्रह जुक्त नवासि सरे । सुअसाढ़ बदी दसमीहुं परे ॥  
बुध वासर धन्य सो धन्य घरी । उपदेसि सती तनु त्याग करी ॥

भयो भोर कहँ कोउ सिद्ध मुनी । परमारथविदक तत्त्व गुनी ॥  
द्विजगेह में सारद देह धरी । रति रंग रमा रस राग हरी ॥

दो०—कोउ कहं तिय की मुपनि ते, बोलेउ श्रीभगवान ।

मोह निवारेउ भगत कर, साहित्र सीलनिधान ॥ १९ ॥

हुलसीसुत तीरथराज गये । अरु मंजि त्रिवेनि कृतार्थ भये ॥  
गृहिवेप विसर्जन कीन्ह तहां । मुनिवेप संवारि चले फफहां ॥  
गढ़ हेलि रु धेनुमती तमसा । पहुंचे रघुवीरपुरी सहसा ॥  
तहवां चौमासक लैं वसिकै । प्रिय संत अनंत विभू रसिकै ॥  
चले वेगि पुरी कहं धाम महा । विस्राम पचीसक बीच रहा ॥  
तिनमां दुइ ठाम प्रधान गुनो । वरदान रु साप की वात सुनो ॥  
घरि चारि दुबौलिमें वास किये । हरिराम कुमारहिं साप दिये ॥  
सो प्रसिद्ध सुप्रेत भयो तेहिते । हरिदरसन आपु लख्यो जेहिते ॥  
पुनि चारु कुंवरि वरदान दियो । जिन संत सुसेवा लियो रु कियो ॥

दो०—जगन्नाथ सुपधाम में, कल्लुक दिना करि वास ।

लिपे वाल्मीकी खकर, जब तब लहि अवकास ॥ २० ॥

रामेखर कहं कीन्ह पयाना । तंहते द्वारावति जग जाना ॥  
बहुरि तहां ते चलि हरपाई । बदरी धामहिं पहुंचे जाई ॥  
नारायन रिषि व्यास सोहाये । दरस दिये मानस गुन गाये ॥  
तहं ते अति दुर्गम पथ लयऊ । मानसरोवर कहं चलि गयऊ ॥  
जिय को लोभ तजै जो कोई । सो तंह जाइ कृतारथ होई ॥  
तंह करि दिव्य संत सत्संगा । जाते होवै भवरस भंगा ॥  
दिव्य सहाय पाय मुनिराई । जात रुपाचल देपे जाई ॥

नीलाचल कर दरसन कीन्हे । परम सुजान मुसुंढिहि चीन्हे ॥  
लौटि सरोवर पै पुनि आये । गिरि कैलास प्रदच्छिन लाये ॥

दो०—इमि करि तीर्थाटन सफल, निवसे भववन जाय ।

चौदह वरिस रु मास दस, सतरह दिवस विताय ॥ २१ ॥  
टिकिके तंह चातुरमास क्रिये । नित रामकथा कहि हर्ष हिये ॥  
वनवासि सुसंत सुनै नित सो । सुनि होंहि अनंदित तेचित सो ॥  
वन मां इक पिप्पल रूप हतो । तिसु ऊपर प्रेत निवास छतो ॥  
जल शौच गिरावहिं तासु तरे । सोइ पानिय प्रेत पियास हरे ॥  
जब जानेउ सो कि अहै मुनि ये । जिन बालपने मोहि साप दिये ॥  
तब एक दिना सो प्रतच्छ कश्यो । कहिये सो करौं जस भाव अद्यो ॥  
हुलसीसुत बोलेउ मोरे मनां । रघुनंदन दरसन को चहना ॥  
सुनि प्रेत कश्यो जु कथा सुनिवै । नित आवत अंजनिपूत अजै ॥  
सबते प्रथमै सो तो आवहिं जू । सब लोगन पाछे सो जावहिं जू ॥

सो०—वेप अमंगल धारि, कुष्ठी को तनु जानि यहि ।

अवसर नीक विचारि, चरन गहिय हठ ठानि यहि ॥ ६ ॥

छं०—हठ ठानि तेहि पहिचानि मुनिवर विनय ब्रहु विधि भापेऊ ।

पद गहि न छाड़ेउ पवनसुत कह कहहु जो अभिलापेऊ ॥

रघुनीर दरसन मोहिं कराइय मुनि कहेउ गदगद वचन ।

तुम जाइ सेवहुं चित्रकूट तहां दरस पैहहु चपन ॥ ४ ॥

दो०—श्रीहनुमंत प्रसंग यह, त्रिमल चरित विस्तार ।

लहेउ गोसाईं दरस रस, विदित सकल संसार ॥ २२ ॥

चित चेंति चले चितकूट चितय । मन माहिं मनोरथ को उपचय ॥  
जब्र सोचहिं आपन मंद कृती । पग पाछ पडै जु रहै न धृती ॥  
सुधि आवत राम स्वभाव जबै । तब्र धावत मारग आतुर है ॥  
यहि भांति गोसाइं तहां पहुंचै । किय आसन राम सुघाटहि पै ॥  
इक बार प्रदच्छिन देन गये । तंह देषत रूप अनूप भये ॥  
जुग राजकुमार सु अस्व चढ़े । मृगया बन षेलन जात कढ़े ॥  
छत्रि सो लपि कै मन मोहेउ पै । अस को तनुधारि न जानि सकै ॥  
हनुमंत बतायउ भेद सत्रै । पछिताइ रहे ललचाइल है ॥  
तब्र धीरज दीन्हेउ वायुतनय । पुनि होइहि दरसन प्रात समय ॥

दो०—सुषद अमावस मौनिया, बुध सोरह सै सात ।

जा वैठै तिसु घाट पै, बिरही होतहि प्रात ॥ २३ ॥

सो०—प्रगटे राम सुजान, कहेउ देहु ब्रात्रा मलय ।

सुक वपु धरि हनुमान, पढ़ेउ चेतावनि दोहरा ॥ ७ ॥

दो०—चित्रकूट के घाट पै, भइ संतन की भीर ।

तुलसिदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुबीर ॥ २४ ॥

छं०—रघुबीर छत्रि निरषन लगे बिसरी सत्रै सुधि देह की ।

को घिसै चंदन दृगन तैं बहि चली सरित सनेह की ॥

प्रभु कहेउ पुनि सो नाहिं चेतैउ स्वकर चंदन है लिये ।

दौ तिलक रुचिर ललाट पै निज रूप अंतरहित किये ॥ ५ ॥

दो०—विरह व्यथा तलफत पड़े, मगन ध्यान इकतार ।

रैन जगाये वायुसुत, दीन्हे दसा सुधार ॥ २५ ॥

सुक' पाठ पढ़ावत नारि नरा । करतल पर है सुक को पिंजरा ॥  
 डुलसीसुत भक्ति महा महिमा । ततकालहिं छाय रही महि मां ॥  
 दिन एक प्रदच्छिन कामद दै । पहुँचे सौमित्र पहाड़िहिं पै ॥  
 तंह खेतक सर्प पड़यो मग में । सित गात मनोहर या जग में ॥  
 तिसु ओर त्रिलंकि गोसाइं कहै । चंद्रोपम सुंदर नाग अहै ॥  
 हरि सृष्टि त्रिचित्र कहै न वनै । निगमागम सारद सेप भनै ॥  
 रिपि दृष्टि पड़ै तिसु पाप गयो । तत्र पन्नग ग्यानि ललात भयो ॥  
 मोहि छूड़ कै तारिय नाथ अत्रै । छुअतेहि गयो सो भुजंग अथै ॥  
 योगशि मुनी तहं छीत भये । निज पूर्व कथा कहि बास ल्ये ॥

दो०—यह प्रभाव मुनिनाथ कर, सुनि गुनि संत सुजान ।

आवन लगे दरस हित, भीर भयो रिपिथान ॥ २६ ॥

बड़ि भीर निहारि गुफा में द्रुके । बहिरंतर हानि त्रिचारि लुके ॥  
 मुनि आवहिं जोगि तपी रु जती । त्रिनु दरसन जाहिं निरास अती ॥  
 दरियानंद स्वामिहुं आय रहे । निज आसन टेकि जमाय रहे ॥  
 लघुसंका के हेतु गोसाइं कढ़े । कर जोरि सो स्वामि भये जु ठढ़े ॥  
 कहे नाथ है होत अनीति बड़ी । छमिये कहिबो मम बात कड़ी ॥  
 लघुसंका लगे बहिरात हैं जू । सुनि साधु गिरा छिपि जात हैं जू ॥  
 दुप पावत सज्जन हैं तेहि ते । विनती हौं करौं सुनिये यहि ते ॥  
 हौं देत मचान बंधाय अत्रै । तेहि ऊपर आसन नाथ फवै ॥  
 करि दरसन होव निहाल सवै । सुठि संत समागम होइ जवै ॥

दो०—विनती दरियानंद की, मानि सजाय मचान ।

वैठत दिन भर लहत सुप, साधक सिद्ध सुजान ॥ २७ ॥

नित नव सतसंग उमाह बढ़ै । सुचि संत हृदय रसरंग चढ़ै ॥  
 नित नित्य विहारहुं देषत हैं । मृगया कर कौतुक पेपत हैं ॥  
 वृंदावन ते हरिवंस हित । प्रियदास नवल निज सिष्य भृत् ॥  
 पठये तिन आइ जोहार किये । गुरुदत्त सुपोथि सप्रेम दिये ॥  
 जमुनाष्टक राधासुधानिधि जू । अरु राधिकातंत्र महा विधि जू ॥  
 अरु पाति दई हितहाथ लिपी । सोरह सै नव जन्माष्टमि की ॥  
 तेहि माहिं लिखी त्रिनती बहुरी । सोइ व्रात मुपागर सो कहुरी ॥  
 रजनी महारास की आवत जू । चित मोर सदय ललचावत जू ॥  
 रसिकै रस मों तनुत्याग चहाँ । मोहि आसिप देइय कुंज लहाँ ॥

सो०—सुनि त्रिनती मुनिनाथ, एवमरतु इति भाषेउ ।

तनु तजि भये सनाथ, नित्य निकुंज प्रवेश करि ॥ ८ ॥

दो०—संडीला ते आय कौ, बसु स्वामी नंदलाल ।

पढ़े रामरच्छा विवृति, जो भक्तन को ढाल ॥ २८ ॥

षट मास रहै सतसंग लहै । चलती त्रिरियां कछु चिह्न चहै ॥  
 दियो सालग्राम को मूर्ति भली । निज हस्त लिपित कवच औ कमली ॥  
 इमि जादव माधव बेनि उभय । चितसुप करुनेस अनंद सदय ॥  
 तपसी सुमुरारि उधार जती । विरही भगवंत समागवती ॥  
 विभवानंद देव दिनेस मिले । अरु दच्छिन देस के स्वामि पिले ॥  
 सब रंग रंगे सतसंग पगे । अहमादि कुनींद सुषुप्त जगे ॥  
 कहे धन्य गोसाइं जु जन्म लये । लहि दरसन हौं कृतकृत्य भये ॥  
 दृग नीर द्रै नहिं बोल सै । सब जाहिं सप्रेम प्रमोद भरै ॥  
 बसु संवत साधु समागम मों । कटिगो नहिं जानि परयो किमि धों ॥

दो०—सोरह सै सोरह लौ, कामद गिरि डिगि वास ।

सुचि एकांत प्रदेस महं, आये सूर सुदास ॥ २९ ॥

पठये गोकुलनाथ जी, कृष्ण रंग में बोरि ।

दृग फेरत चित चातुरी, लीन्ह गोसाईं छोरि ॥ ३० ॥

कवि सूर दिपायउ सागर को । सुचि प्रेम कथा नट नागर को ॥

पद द्वय पुनि गाय सुनाय रहे । पदपंकज पै सिर नाय कहे ॥

अस आसिप देख्य स्याम ढरै । यहि कीरति मोरि दिगंत चरै ॥

सुनि कोमल व्रैन सुदादि दिये । पद पोथि उठाय लगाये हिये ॥

कहै स्याम सदा रस चापत हैं । रुचि सेवक की हरि रापत हैं ॥

तनिको नहिं संसय है यहि मां । स्तुति सेप व्रपानत हैं महिमा ॥

दिन सात रहे सतसंग पगै । पदकंज गहे जव जान लौ ॥

गहि बांह गोसाइं प्रबोध किये । पुनि गोकुलनाथ को पत्र दिये ॥

लै पाति गये जव सूर कवी । उर में पधराय के स्याम छत्री ॥

दो०—तव आयो मेवाड़ ते, विप्र नाम सुखपाल ।

मीरा बाई पत्रिका, लायो प्रेम प्रवाल ॥ ३१ ॥

पढ़ि पाती उत्तर लिये, गीत कवित्त बनाय ।

सत्र तजि हरि भजिबो भलो, कहि दिय विप्र पठाय ॥ ३२ ॥

तड़के इक बालक आन लयो । सुठि सुंदर कंठ सों गान लयो ॥

तिसु गान पै रीझि गोसाईं गये । लिपि दीन्ह तवै पद चारि नये ॥

करि कंठ सुनायउ दूजे दिना । अड़ि जाय सो नूतन गान विना ॥

मिसु याहि बनावन. गीत लगे । उर भीतर सुंदर भाव जगे ॥

जव सोरह सै वसु वीस चलो । पद जोरि नवै सुचि रांध गयो ॥



तेहि रामगीतावलि नाम धरयो । अरु कृष्णगीतावलि राँचि सरयो ॥  
दोउ ग्रंथ सुधारि लिपै रुचि सों । हनुमंतहि दीन्ह सुनाय जिसों ॥  
तत्र मारुति है कै प्रसन्न कइयो । करि प्यान अवधपुर जाइ रह्यो ॥  
इमि इष्ट को आयसु पाइ चले । बिरसे सुठि तीरथराज थले ॥

दो०—तेहि अवसर उत्तम परब, लागो मकर नहान ।

जोगी तपी जती सती, जुरै सयान अजान ॥ ३३ ॥

तेहि पर्व ते पाछे गये दिन छै । बट छांह तरे जु लष्यो मुनि द्वै ॥  
तपपुंज दोऊ मुप कांति तपै । छत्रि छाम छपाकर छंद छपै ॥  
करि दंडप्रनाम सुदूरहिं ते । करजोरि कै ठढ भये तहिं ते ॥  
मुनि सैन सों एक हंकारि लियो । अपने ढिग आसन चारु दियो ॥  
तेहि टारि कै भूमि में बैठि गये । परिचय निज दै परिचाय लये ॥  
सोइ रामकथा तंह होत रह्यो । गुरु सूकरषेत में जौन कइयो ॥  
त्रिसमयजुत वृद्धेउ गुप्त मता । कहि जागत्रलिक मुनि दीन्ह ब्रता ॥  
हर रंचि भवानिहिं दीन्ह सोई । पुनि दीन्ह भुसुंढिहिं तत्त गोई ॥  
हौं जाइ भुसुंढि ते ताहि लहेउं । भरद्वाज मुनी प्रति आइ कहेउं ॥

दो०—यहि त्रिधि मुनि परितोष लहि, पद गहि पाय प्रसाद ।

सुनै जुगल मुनिवर्ज कर, तहां विमल संवाद ॥ ३४ ॥

तेहि ठांव गये जब दूजे दिना । थल सून निहारु मुनीस बिना ॥  
बट छांह न सो नहिं पर्नकुटी । मन त्रिसमय बाढ़ेउ मर्म पुटी ॥  
उर राषि उभय मुनि सील चले । हरि प्रेरित कासि की ओर ढले ॥  
कछु दूरि गये सुधि आइ जबै । मन सोचत का करिये जु अबै ॥  
जो भयो सो भयो अब याहि सधै । हर दरसन कै चलिहौं अबधै ॥

मंन ठीक किये मग आगु बढ़े । चलि कै पुनि सुरसरि तीर कढ़े ॥  
 तंब तीरहि तीर चले चित दै । भइ सांझ जहां सो तहां टिकिगै ॥  
 दिग वारि पुरा त्रिच सीतामढ़ी । तंह आसन डारत वृत्ति चढ़ी ॥  
 नहिं भूप न नींद त्रिछिस्त दसा । उर पूरव जनम प्रसंग बसा ॥

दो०—सीतावटतर तीन दिन, बसि सुकवित्त बनाय ।

बंदि छोड़ावत त्रिध नृप, पहुंचे कासी जाय ॥ ३५ ॥

भगत सिरोमनि घाट पै, त्रिप्रगेह करि बास ।

राम त्रिमल जस कहि चले, उपज्यो हृदय हुलास ॥ ३६ ॥

दिन मां जितनी रचना रचते । निसि मांहि सुसंचित ना बचते ॥  
 यह लोपक्रिया प्रति द्यौस सरै । करिये सो कहा नहिं बूझि परै ॥  
 अठवें दिन संभु दिये सपना । निज बोलिमें काव्य करो अपना ॥  
 उचटी निंदिया उठि बैठु मुनी । उर गूंजि रह्यो सपने की धुनी ॥  
 प्रगटे सिव संग भवानि लिये । मुनि आठहु अंग प्रणाम किये ॥  
 सिव भापेउ भापा में काव्य रचो । सुरवानि के पीछे न तात पचो ॥  
 सब कर हित होइ सोई करिये । अरु पूर्व प्रथा मत आचरिये ॥  
 तुम जाइ अवधपुर बास करो । तंहई निज काव्य प्रकास करो ॥  
 मम पुन्य प्रसाद सों काव्यकला । हांइहैं सम साम रिचा सफला ॥

सो०—कहि अस संभु भवानि, अंतरधान भये तुरत ।

आपन भाग्य ब्रवानि, चले गोसाईं अवधपुर ॥ ९ ॥

दो०—जेहि दिन साहि सभान में, उदय लग्यो सनमान ।

तेहि दिन पहुंचे अवध में, श्रीगोसाईं भगवान ॥ ३७ ॥

सरजू करि मज्जन गव दिन में । विचरे पुलि नारन बीथिन में ॥  
 एक संत मिले कहने सो लगे । थल रम्य लपैं महबीरी लगे ॥  
 लै संग सो ठाम दिपायो मले । बट की बिटपावलि पुन्य थले ॥  
 तिन मां बट एक बिसाल थही । तिसु मूल में बेदिका सोहि रही ॥  
 तिसु ऊपर बैठु सिधासन से । एक सिद्ध प्रसिद्ध हुतासन से ॥  
 थल देषि लोभायो गोसाइं मना । बसिये यहि ठांव कुटीर बना ॥  
 जब सिद्ध के सन्निधिं मों गुदरे । तजि आसन सो जय जय उचरे ॥  
 सो कइयो गुरु मोर निदेस दियो । तेहि कारन हौं यह ब्रास लियो ॥  
 गुरु मोर बतायउ मरम सबै । सो तो देपत हौं परतच्छ अबै ॥

कु०—मम गुरु कहेउ कि करहि किन सिद्ध पृष्ठ थल ब्रास ।

कछु दिन बीते कहहिंगे हरिजस तुलसीदास ॥

हरिजस तुलसीदास कहहिंगे यहि थल आई ।

आदि कबी अवतार वायुमंदन बल पाई ॥

राजराज बट रोपि दियो मरजाद समुत्तम ।

बसि यहं ठाहर ठाटु मानि अति हित सासन मम ॥१॥

सो०—जब ऐहैं यहि ठाम, हुलसीसुत तिसु हेतु हित ।

सौपि कुटी आराम, तन तजि ऐहहु मम निकट ॥ १० ॥

उपदेस गुरू मोहि नीक लग्यो । बहु जनम पुरातन पुन्य जग्यो ॥

बसिकै रसिकै तपिकै चौरी । हौं जोहत बाट रहेउं रौरी ॥

अब राजिय गाजिय नाथ यहां । हौं जात्र बसे गुरु मोर जहां ॥

कहिके अस बेदिका ते उतरयो । सिर नाइ सिधारेउ दूरि परयो ॥

तंह आसन मारिकै ध्यान धरयो । तिसु जोग हुतासन गात जरयो ॥

यह कौतुक देपि गोसाइं कहै । धनुधारि ! तेरी बलिहारि अहै ॥  
निबसे तंह सौष्य सुपास लहे । दृढ़ संजम जो मम जोग गहे ॥  
पय पान करै सोउ एक समय । रघुवीर भरोस न काहुक भय ॥  
जुग बत्सर बीत न वृत्ति डगो । इकतीस को संवत आई लगो ॥

दो०—रामजन्म तिथि द्वार सब, जस त्रेता मंह भास ।

तस इकतोसा महं जुरो, जोग लग्न ग्रह रास ॥ ३८ ॥

नवमी मंगलवार सुभ, प्रात समय हनुमान ।

प्रगटि प्रथम अभिपेक किय, करन जगत कल्यान ॥ ३९ ॥

हर, गौरी, गनपति, गिरा, नारद, सेप सुजान ।

मंगलमय आसिप दिये, रत्रि, कवि, गुरु गिरवान ॥ ४० ॥

सो०—यहि त्रिधि भा आरंभ, रामचरितमानस त्रिमल ।

सुनत मिटत मद दंभ, कामादिक संसय सकल ॥ ११ ॥

दुइ बत्सर साते क मास परे । दिन छविस् मांझ सो पूर करे ॥

तैंतीस को संवत औ मगसर । सुभ चौस सुराम त्रिवाहहि पर ॥

सुठि सप्त जहाज तयार भयो । भवसागर पार उतारन को ॥

पापंड प्रपंच ब्रह्मवन को । सुचि साविधक धर्मचलावन को ॥

कलि पाप कलाप नसावन को । हरि भगति छट्टा दरसावन को ॥

मत वाद त्रिवाद मिटावन को । अरु प्रेम को पाठ पढ़ावन को ॥

संतन चित चाव चढ़ावन को । सज्जन उर मोद बढ़ावन को ॥

हरिरस हर बस समुझावन को । सुनि संमत मार्ग मुझावन को ॥

जुत सप्त सांपान समाप्त भयो । सदग्रंथ ग्रन्थों मुप्रचन्ध नयो ॥

दो०—महिसुत बासर मध्य दिन, सुम मिति तत्सत कूल ।  
 सुर समूह जय जय किये, हरषित वरपे फूल ॥ ४१ ॥  
 जेहि छिन यह आरंभ भो, तेहि छिन पूरेउ पूर ।  
 निरबल मानव लेषनी, पींचि लियो अति दूर ॥ ४२ ॥  
 पांच पात गनपति लिपे, दिव्य लेपनी चाल ।  
 सत, सिव, नाग, अरु द्यू, दिसप, लोक गये ततकाल ॥ ४३ ॥  
 सबके मानस में बसेउ, मानस रामचरित्र ।  
 बंदन रिपि कवि पद कमल, मन क्रम बचन पवित्र ॥ ४४ ॥  
 वंदों तुलसी के चरन, जिन कान्हों जग काज ।  
 कलि समुद्र बूडत लष्यो, प्रगटेउ सप्त जहाज ॥ ४५ ॥  
 परम मधुर पावन करनि, चार पदारथ दानि ।  
 तुलसीकृत रघुपति कथा, कै सुरसरि रसपानि ॥ ४६ ॥

सो०—प्रगटे श्री हनुमान, अथ सों इति लौं सव सुनै ।  
 दिये सुभग बरदान, कीरति त्रिभुवन बस करी ॥ १२ ॥  
 मिथिला के सुसंत सुजान हते । मिथिलाधिप भाव पगे रहते ॥  
 सुचि नाम रुपारुन खामि जुतो । तेहि अबसर औष में आयो हुतो ॥  
 प्रथमै यह मानस तेई सुनै । तिनहीं अधिकारि गोसाइं गुनै ॥  
 खामि नंद सुलाल को सिष्य पुनी । तिसु नाम दलाल सुदास गुनी ॥  
 लिषि कै सोइ पोथि खठाम गयो । गुरु के टिग जाय सुनाय दयो ॥  
 जमुना तट पै त्रय बत्सर लों । रसपानहिं जाइ सुनावत भो ॥  
 तब ते बहु संप्यक पात लिषै । कल्लु लोगन औ निज हाथ रिषै ॥

सुकुतामनि दास जु आयो हतो । हरि समयन को गीत सुनायो हतो ॥  
तिसु भावहि पै मुनि रीझि गये । पल मों पल भाँजत सिद्धि दये ॥

दो०—तत्र हरि अनुसासन लहे, पहुँचे कासी जाय ।

बिखनाथ जगदंब प्रति, पोथी दियो सुनाय ॥ ४७ ॥

छं०—पोथी पाठ समाप्त कै के धरे, सिवलिंग द्विग रात में ।

मूरप पंडित सिद्ध तापस जुरे, जत्र पट पुल्लेउ प्रात में ॥

देपिन तिरपित दृष्टि ते सब जने, कौन्ही सही संकरं ।

दिव्यापर सों लिप्यो पढ़े धुनि सुने, सत्यं सिवं सुंदरं ॥ ६ ॥

शिव की नगरी रस रंग भरी । यह लीला जु पाटि गई सगरी ॥

हरपे नर नारि जोहारि किये । जय जय धुनि बोलि बलैयां लिये ॥

पै पंडित लोगन सोच भयो । सब मान महातम जीव गयो ॥

पढ़िहैं यह पोथि प्रसादमई । तत्र पूछिहैं कौन हमें मनई ॥

दल बाधि ते निंदत वागत भे । सुर बानि सराहत पागत भे ॥

कोउ ग्रंथ चोरावन हेतु रचे । फरफंद अनेक प्रपंच पचे ॥

निधुआ सिधुआ जुग चोर गये । रपवार त्रिलोकि निहाल भये ॥

तेहि पूछे गोसाइं ते कौन धुहां । जुग त्यामल गौर धरे धनुहां ॥

सुनि वैन भरै जल नैन कहै । तुम धन्य हते हरि दरस लहै ॥

दो०—तजि कुकरम तसकर तरे, दिय सब वस्तु लुटाय ।

जाइ धरे टोडर सदन, पोथी जतन कराय ॥ ४८ ॥

पुनि दूसर पात लिप्यों रुचि सों । तेहिते लिपि पै लिपि टोन्न लगी ॥

दिन दून प्रचार बढेव लपि कै । सब पंडित हारि टिया क्षति कै ॥

तब मित्र बटेसर तान्त्रिक ही । टुप दाह सुधीगन रोय कहीं ॥  
 तिन मारन केर प्रयोग कियो । हठि भैरव प्रेरि पठाय दियो ॥  
 हनुमंत से रच्छक देपि डरे । उलटे सुबटेसर प्राण हरे ॥  
 तब हारि चले दल को सजि कै । मधुसूदन सरस्वति के मठ पै ॥  
 कहै कीन्ह प्रमान महेस सहीं । किसु कोटि को है सो नहिं बात कहीं  
 खुति साख पुरान इतिहास इये । केहिके समकच्छ तिसै कहिये ॥  
 जति राज कहे मंगवाउव जू । तत्र पोथि त्रिलोकि वताउव जू ॥  
 दो०—जति मंगाय पोथी पढ़े, उपज्यो परमानंद ।

पेरि दिये लिपि श्लोक यह, जयति सच्चिदानंद ॥ ४९ ॥

श्लोक—आनन्दकानने ह्यस्मिन् जङ्गमस्तुलसीतरुः ।

कवितामञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥

जब पंडित आये कहे तिन ते । किन पूछिय वात सदासिवसे ॥  
 निगमागम साख पुरान सबै । क्रम ते धरि मानस नीचे फवै ॥  
 जब होत त्रिहान धुलेउ पट तो । सब टूटि परे तेहि देपन को ॥  
 लपि वेद के ऊपर मानसही । सब पंडित लाज गरे तितही ॥  
 चरनों पै पड़े चरनोदक लै । अपराध कराइ छमा घर गै ॥  
 नदिया को सुपंडित दत्त रबी । सब साखत्रिसारद आसु कबी ॥  
 मुनि ते हठि बाद त्रिवाद कियो । अरु हारि त्रिषाद बढायो हियो ॥  
 जब न्हान गोसाइं गये मठ ते । तब मारन हेतु गयो लठ ले ॥  
 हनुमंत सुरच्छक देखि भज्यो । अपनी करनी पर आपु लज्यो ॥  
 पुनि जाइ गोसाइं रिशाय लियो । बर हेतु सुधी हठ भूरि कियो ॥

छं०—मांगेउ सो वर तजिये पुरी मुनि विवस भे वर के दिये ।  
 'कासिनाथ कहि निव्रत हौं' कवित्त बनाय दृढ़ निस्चय किये ॥  
 सो लिपि धरे हर मंदिरहि प्रस्थान दच्छिन दिसि किये ।  
 सिव दै दरस समुझाइ फेरे छुभित मन धीरज दिये ॥ ७ ॥

दो०—मुनि प्रस्थान मुदित भयो, गयो दरस हित धीर ।  
 वंद भयो पट घुनि मई, कोपसहित गंभीर ॥ ५० ॥

सो०—जाइ गोसाइं मनाउ, पग परि बहु विधि विनय करि ।  
 पुरि महं लाइ बसाउ, ना तो होइहि नास तव ॥ १३ ॥

मुनि टोडर आय कियो विनती । मुनि मानिय सेवक की मिनती ॥  
 प्रिय घाट असी पर भौन नयो । वनिकै सह घाट तयार भयो ॥  
 बसिकै सुप सों सुप देख्य जू । पदकंज सदा हम देख्य जू ॥  
 सुप मानि गये तेहि ठाम बसे । रघुवीर गुनावलि माहिं रसे ॥  
 कलि आयउ राति कृपान लिये । मुनि कहं बहुभांति सों त्रास दिये ॥  
 सो कहेउ जल बोरहु पोधि निजे । न तो दाढ़िहीं ताड़िहीं चेतु अत्रे ॥  
 कहिके अस सो जु सिंभारो जत्रे । मुनि ध्यान धरेउ हरि हेतु तत्रे ॥  
 हनुमंत कह्यो कलि ना मनिहै । मोहि वरजत वैर महा ठनिहै ॥  
 लिखिकै विनयावलि देहु मोही । तव दंड दियाउत्र तात ओही ॥

दो०—विदित राम विनयावली, मुनि तव निरमित कान्द ।  
 मुनि तेहि सार्पां सुत प्रभू, मुनिहिं अभय कर दान्द ॥ ५१ ॥

मिथिलापुर हेतु पयान किये । सुकृती जन को मुग्ध सांति दिये ॥  
 मृग आस्रम में दिन चारि रहे । करहान बुआ कर पाप दहे ॥



दिन एक बसे मुनि हंसपुरा । परसी को सुहाग दिये बहुरा ॥  
 गउवांठ, में राउ गंभीर धरे । दुइ बासर लें तंहवां ठहरे ॥  
 ब्रह्मेस सुदरसन कैंके चले । पुनि कांत ब्रह्मपुर मां निकले ॥  
 संवरू सुत मांगरु ग्वाल हतो । दुहि दूध दियो सुर साधु रतो ॥  
 बर दीन्ह तजे चोरहाई सहं । निरबंस न होवहुगे कबहुं ॥  
 तब बेलापतार में आय रहे । तहं दास धनी निज कष्ट कहे ॥

छं०—कहे कष्ट आपन काहि जाइहि प्रान मम पातक बयों ।  
 मूसहि धवायों भोग कहि कहि घात हरि सौहैं कियो ॥  
 रघुनाथसिंह जानेउ दगा करि कोप सो बोलेउ मुने ।  
 नहिं षाहि ठाकुर सामुहे मम तोपि बध निस्चय गुने ॥ ८ ॥

सो०—मुनिबर धीरज दीन्ह, कियो रसोई साधु तब ।  
 सन्मुख भोजन कीन्ह, ठाकुर लषि रिषि इमि कहेउ ॥ १४ ॥

दो०—तुलसी झूठे भगत को, पति राखत भगवान् ।  
 जिमि मूरष उपरोहितहिं, देत दान जजमान ॥ ५२ ॥

निज गेह पवित्र करावन को । लैं गो मुनि को बर नायक सो ॥  
 तहँ भक्त सुगोविंद मित्र मिले । जिसु दृष्टि ते लोह धना पिघिले ॥  
 मुनि गांव के नांव में फेर करे । रघुनाथपुरा तिसु नाम धरे ॥  
 तंह ते चलिक्कै बिचरे बिचरे । रिषि हरिहर खेतमें जा पधरे ॥  
 पुनि संगम मंजि चले सपदी । नियराये बिदेहपुरी छपदी ॥  
 धरि बालिका रूप बिदेह लली । बहराय कौ धीर धवाय चली ॥  
 जब जानेउ मरम कहा कहिये । मन ही मन सोनि कृपा रहिये ॥

द्विज लोगन हाल के घेरि रहे । अरु आपन घोर विपत्ति कहे ॥  
छत सूत्रा नवात्र बड़ो रगरी । सो तो वारहो गांव की वृत्ति हरी ॥

दो०—दया लागि कर्त्तव्य गुनि, सुमिरे वायुकुमार ।  
दंडित करि बहुरायउ, सुपञ्जुत द्विज परिवार ॥ ५३ ॥  
मिथिला ते कासी गये चालिस संवत लग ।  
दोहावलि संग्रह किये, सहित विमल अनुराग ॥ ५४ ॥  
लिपे बालमीकी बहुरि, इकतालिस के मांहि ।  
मगसर सुदि सतिमी रत्रौ, पाठ करन हित ताहि ॥ ५५ ॥  
माधव सित सिध जनम तिथि, ब्यालिस संवत वींच ।  
सतसैया बरनै लगे, प्रेम वारि ते सींच ॥ ५६ ॥

सो०—उतरु सनीचरि मीन, मरी परी कासीपुरी ।  
लोगन है अति दीन, जाइ पुकारे रिपि निकट ॥ १५ ॥  
लागिय नाथ गोहार अपर बल कछु न बिसाता ।  
रापैं हरिके दास कि सिरजनहार विधाता ॥

दो०—करुनामय मुनि सुनि विधा, तंत्र कवित्त वनाय ।  
करुनानिधि सों विनय करि, दांन्ही मरां भगाय ॥ ५७ ॥  
कवि केसवदास बड़े रसिया । घनस्याम सुकुल नभ के बसिया ॥  
कवि जानि के दरसन हेतु गये । रहि बाहिर नूचन भेजि दिये ॥  
सुनिकै जु गोसाइं कहै इतनो । कवि प्राकृत केसव आवन दो ॥  
फिरिगे झट केसव सो सुनिकै । निज तुरहता आपुइ ते गुनिकै ॥  
जव सेवक टेरेउ ने कहिकै । हाँ भेटिहाँ कान्हि विनय गहिकै ॥

घनस्याम रहै घासिराम रहै । बलभद्र रहै ब्रह्माम लहै ॥  
रचि राम सुचंद्रिका रातिहि में । जुरै केसवजू असि घाटिहि में ॥  
सतसंग जमी रस रंग मची । दोउ प्राकृत दिव्य ब्रिभूति पची ॥  
मिटि केसव को संकोच गयो । उर भीतर प्रीति की रीति रयो ॥

दो०—आदिल साही राजके, भाजक दान बनेत ।

दत्तात्रेय सुबिप्रवर, आये रिषय निकेत ॥ ५८ ॥

करि पूजा आसिष लहै, मांगे पुन्य प्रसाद ।

लिषित वाल्मीकी खकर, दिये सहित अहलाद ॥ ५९ ॥

अमरनाथ जोगी तिया, हरि बैरागी लीन ।

ताते कोपि तिनहिं रहित, कंठी माला कीन ॥ ६० ॥

मच्यो कोलाहल साधु सब, आये मुनिबर पास ।

पेरि मिल्यो सो आसननि, रिषय कृपा अनयास ॥ ६१ ॥

आयो सिद्ध अघोरिया, अलख जगावत द्वार ।

छिन महँ सिद्धाई हरी, उपदेसेउ क्षुति सार ॥ ६२ ॥

निमिषार को त्रिप्र सुधर्मरता । बनषंडि सुनाम ब्रिमोह गला ॥

सब तीरथ लुप्तहिं चाहु थपै । तिसु हेतु सदासिव मंत्र जपै ॥

इक प्रेत धना ढिग ठाढ़ भयो । बहु द्रव्य गड़ो सो दिषाई दयो ॥

सोकझो धन लै सुम काज सरो । यहि जोनि ते मोर उबार करो ॥

मन हरषित त्रिप्र कश्यो मोहि कां । चौधाम घुमायं सुतीरथ मां ॥

तब कासि गुसाईं के तीर चलो । तिस दरसन होय तुम्हारो भलो ॥

सुषमानि कै तै सोइ प्रेत कियो । नम मांहिं असी पर छेक छियो ॥

जन सोर मच्यो बहु लोग जुरे । सत्र कौतुक देपहिं अंग फुरे ॥  
निज आस्रम ते कढ़ि आयो मुनी । नम ते भयो जयजयकार धुनी ॥

दो०—दिव्य रूप धरि जान चढ़ि, प्रेत गयो हरिधाम ।

तुलसी दरस प्रताप ते, रं भयो त्रिधि वाम ॥ ६३ ॥

वनपंडी महि पर गिरेउ, पग छुड़ कियो प्रनाम ।

मुनि सन सत्र व्यवरा कह्यो, बसेउ रसेउ तेहि ठाम ॥ ६४ ॥

तासु विनय बस मुनि चले, तीरथ थापन काज ।

पहुंचे अवधहिं पांच दिन, तहां टिके रिपिराज ॥ ६५ ॥

दौ रामगीतावलि गायक को । जे गावहिं जस रघुनायक को ॥

मन बोध तिवारिहिं औध छटा । सत्र कंचन मय वन भूमि अटा ॥

देपरा के चले गैनाही टिके । पुनि सूकरपेत में जाय यिके ॥

सियावार सुगांव में वास लिये । तंह सांता सुकूप को पाथ पिये ॥

पहुंचे लखनैपुर मोद भरेः । अरु धेनुमती तट पै उतरे ॥

कहुं दीनन को प्रतिपाल करैं । कहुं साधुन के मन मोद भरैं ॥

कहुं लखनलाल को चरित बचैं । कहुं प्रेम मगन हैं आपु नचैं ॥

कहुं रामायन कल गान सचैं । उत्साह कोलाहल भूरि मचैं ॥

कहुं आरत जन को ताप हरैं । कहुं अग्यानिन उर ग्यान धरैं ॥

दो०—निरधन भाट दमोदरहिं, आसिप दै कत्रि कौन ।

लहेउ त्रिपुल धन मान बहु, भा कत्रिकला प्रवीन ॥ ६६ ॥

तहैं ते मलिहावाट में, आय संत सिरताज ।

रामायन निज कृत दिये, ब्रजवल्लभ भटराज ॥ ६७ ॥

पुनि अनन्य माधव मिले, कोटरा ग्रामहिं जाय ।

माता प्रति सिच्छा सुने, भक्ति दिये वतलाय ॥ ६८ ॥

पुनि जाय त्रिटूर में रैनि बसे । सरि मज्जत पांक में जाइ धसे ॥

गहि बांह निकारेउ जन्हुसुता । तन तायो जरा न रही जु बुता ॥

तंह ते चलि जाय संडीले परे । गौरीसंकर गृह माथ धरे ॥

कहे या घर में छी है जनम पपा । मनसूपा खयं श्रीकृष्ण सपा ॥

कछु काल गये सोइ जन्म धरयो । बंसीधर ताकर नाम पर्यो ॥

कबि भो मुनिवर उपदेस कियो । पद रास सुने तनु त्याग दियो ॥

तेहि व्योम विमान पै जात लब्धो । हलवाई सुप्रसिद्ध प्रवीन मण्यो ॥

सतसंगिन देपि निहाल भये । उपदेस सनातन पूर ल्ये ॥

दो०—संडीले ते मुनि चले, मग ठाकुर छितिपाल ।

नमन कियो नहिं मद मतो, तुरत भयो कंगाल ॥ ६९ ॥

सो०—त्रिप्रन किय अपमान, ताते ते निरधन भये ।

कैथन किय सनमान, सुषी भये धन वंस लहि ॥ १६ ॥

दो०—जुरै जुलाहे भेंट धरि, लहै त्रिपुल धन धान्य ।

पहुंचे नैमिष बन मुनी, सर्व तंत्र सनमान्य ॥ ७० ॥

सोधि सकल तीरथ थपे, किय त्रय मास निवास ।

मिले पिहानी के सुकुल, संवत ल्यु उनचास ॥ ७१ ॥

बैराबाद को सिद्ध प्रवीन धरे । मुनि आपुइ जोग ते जाइ परे ॥

करि ताहि निहाल चले मिसरिष । संग में बनखंडि दुचारिक सिष ॥

पुनि नाव चढ़े सुख सों बिचरे । पुर राम सुनै तुरतै उतरे ॥

नृप सेवक टंटा बेसाहि रहे । सब माल मता तजि राह गहे ॥  
 सिंहराम सुनो पग दौरि गह्यो । करिके सु विनयपद टेकिरह्यो ॥  
 तत्र लौटि परे तिसु धाम वसे । हनुमंतहिं थापि तहां त्रिलसे ॥  
 वंसीवन नाम धरयो बटरय । मगसर सुदि पंचमी रास रचय ॥  
 वृंदावन में तंह ते जु गये । सुठि राम सुघाट पं वास लये ॥  
 बड़ धूम मचो सुचि संत धुरे । मुनि दरसनको नर नारि जुरे ॥

दो०—खामी नाभा ढिग गये, ते किय बहु सनमान ।

उच्चासन पधराइ मुनि, पूजे सहित त्रिधान ॥ ७२ ॥

विप्र संत नाभा सहित, हरि दरसन के हेत ।

गये गोसाईं मुदित मन, मोहन मदन निकेत ॥ ७३ ॥

राम उपासक जानि प्रभु, तुरत धरे धनुवान ।

दरसन दिये सनाथ किय, भगत ब्रह्म भगवान ॥ ७४ ॥

बरसाने में लीला सो व्यापि गई । मुनि आसन पं बड़ि भीर भई ॥  
 कछु कृष्ण उपासक द्वेष भरे । धनुवान धरे पर मोह सरै ॥  
 तिनको समुझाये सुतत्त्व महा । जन को प्रन राम न राप्यो कहां ॥  
 सुभ दच्छिन देस ते जात हतो । हरि मूरति अवधहिं थापन को ॥  
 त्रिनाम भयो जमुनातट पं । लगि मूरति मोहै विप्र उदय ॥  
 सो चहो हरि विप्रह वाई थपै । त्रिनती किय जाइ गोसाइहिं पं ॥  
 न उठाये उठे जव सो प्रतिमा । तत्र थापित कीन्ह तहें जिजिमां ॥  
 तिसु नाम कौसल्यानंदन जू । मुनिराज थरं जग वंदन जू ॥  
 नंददास कनौजिया प्रेम महे । जिन सेव सनातन तार पड़े ॥  
 सिच्छा गुरु बंधु भये तेहिते । अति प्रेम सों आय मिने यहि ते ॥

दो०—हित सुत गोर्षानाथ प्रति, महिमा अवध व्रपानि ।

जेहि नहिं ठांव ठिकान कहूं, तिनहिं वसावत आनि ॥ ७५ ॥

फेरि अमनिया दिये पुनि, सपरा ताहि वताय ।

हलवाई वनिकन सदन, बालकृष्ण दिपराय ॥ ७६ ॥

सो०—इमि लीला दरसाय, भगतन उर आनंद भरि ।

चित्रकूट मंह जाय, किये कछुक दिन वास तहं ॥ १७ ॥

सतकाम सुविप्र गोसाईं लगे । दोच्छाहित आयो सुवृत्ति जगे ॥

लपि कामविकार न सिप्य किये । टिकिगो तंह सो हठ ठानि हिये ॥

जब राति में रानि कदंन लता । आइ तासु विलोकन सुंदरता ॥

तिन दीपक वाति बढ़ाइ लियो । लपिकै मुनि सुंदर सीप दियो ॥

सो विप्र लजाइ कै पाँय परयो । करिकै मुनि छोह विकार हरयो ॥

पुनि विप्र दरिद्र महा जलपा । मंदाकिनि इवन हेतु चला ॥

तिसु प्राण बचावन हेतु रिपय । सुठि दारिद्र मोच सिला प्रगट्य ॥

पुनि साहि पवास पठायउ जू । मुनिराजहिं दिछौं बुलायउ जू ॥

दो०—चले जमुन तट नृप तिलक, साधु कियो सरनाम ।

राधावल्लभ भगति दिय, रीझे स्यामा स्याम ॥ ७७ ॥

सो०—उड़छै केसवदास, प्रेत हतौ घेरेउ मुनिहिं ।

उधरं विनहिं प्रयास, चढ़ि विमान खरगहि गयो ॥ १८ ॥

चरवारि के ठाकुर कीं दुहिता । जिसु सुंदरता पै जग मुहिता ॥

इक नारिहिं ते तिसु व्याह भयो । जय जानेउ दारुन दाह भयो ॥

वर कीं जननी जनमावत हीं । सो प्रसिद्ध कियो तेहि पुत्र कही ॥

अनुकूलहिं साज समान कियो । जे जानत भे तिहि पूजि दियो ॥  
 यहि कारन धीपा भयो ब्रह्मै । अत्र रोवत मीजत हाय सत्रै ॥  
 तिन घेरे दया लागि संत हिये । तिसु हेतु नवाहिक पाठ किये ॥  
 बिनाम लगायो सो जानिय जू । तिसु सव्द प्रथम यह आनिय जू ॥  
 हिय,सत, अरु कौन्हरु स्याम लगा । औ राम सैल पुनि हारि परा ॥  
 कह मारुतसुत, जहं तहं पुन्यं । इति पाठ नवाहिक ठाम अयं ॥

दो०—नारी ते नर होइ गयो, करतहि पाठ विराम ।

पुलकित जय तुलसी कहै, जय जय सीताराम ॥ ७८ ॥

तंह ते पंचयें दिन मुनी, पहुंचे दिछां जाय ।

पत्ररि पाय तुरतहिं नृपति, लिय दरवार बुलाय ॥ ७९ ॥

दिछीपति विनती करी, दिपरावहु करमात ।

मुकरि गये बंदी किये, कौन्हे कपि उतपात ॥ ८० ॥

वेगम को पट फारेज, नगन भई सब वाम ।

हाहाकार मच्यो महल, पटको नृपहिं धराम ॥ ८१ ॥

मुनिहि मुकुत ततछन किये, छमाऽपराध कराय ।

विदा कौन्ह सनमान जुत, पीनस पै पधराय ॥ ८२ ॥

चलि दिछां ते आये महावन में । निसि वास किये जु अर्हावन में ॥

इक ग्वार भगीरथ पै दुरिगे । तेहि सिद्ध सुसंत वनावन भे ॥

दसयें दिन औधहिं आय रहे । भरि पाप तहां मुसनाय रहे ॥

हरिदास सुभक्त सुगीत रयो । तेहि मां करु सव्द असुद्ध भयो ॥

सुधराये मुनी पै न बोध भयो । तिसु कानिन में अग्रोध भयो ॥

सपने मुनि ते रघुवार कयो । नहिं सुद्ध असुद्ध मुभाव गयो ॥



तब जाइ मुनी तिसु भाव भरो । जस गावत हौं तस गाया करो ॥  
मुनि बालचरित्र अनंदित हूं । मुनि तुष्ट किये सुपटंबर दै ॥

दो०—देव मुरारी भेंट मिलि, सहित मल्लकादास ।  
पहुँचे कासी में रिपय, किये अपंड निवास ॥ ८३ ॥

सुचि माघ में गंग नहाय हते । सरि भीतर मंत्र महा जपते ॥  
तन वृद्ध सो कांपत रोम अड़े । गनिका रहि देखत तीर पड़े ॥  
कदिकै मुनि सींचेउ वल्ल धरे । दुइ वुंद सोई गनिका पै परे ॥  
बेस्या मन में निरबेद जगो । बहु दृश्य निरय दिपरान लगो ॥  
सब पाप प्रपंच ते दूर भगी । उपदेस ले हरिगुन गान लगी ॥  
हरिदत्त सु विप्र दरिद्र महा । तिसु गंग के पार में वास रहा ॥  
मुनि के द्विग आय विपत्ति कही । जस दीन दसा घर केर रही ॥  
रिपि अस्तुति गंग वनाय करा । सुरसरि दै भूमि विपत्ति हरी ॥

दो०—निंदक मुनि अरु भगतिपथ, भुलई साहु कलर ।  
निघन भयउ टिकठा धरे, लैगे फंकनहार ॥ ८४ ॥

तास तिया रोवत चली, मुनि द्विग नायउ सीस ।  
सदा सोहागिन रहहु तुम, मुनिवर दान्ह असीस ॥ ८५ ॥  
बिलपि कही सो निज दसा, सब मुनि लिये मँगाय ।  
चरनामृत मुय देइकै, तुरतै दिये जियाय ॥ ८६ ॥

तेहि वासर ते मुनि नेम लिये । अरु बाहिर वैठव त्यागि दिये ॥  
रहे तीन कुमार बड़े सुकृती । मुनि चरनन में तिनकी भगती ॥  
रिपिकेप रहौं मनिकरनिका पै । विसुनाथ के मंदिर सांति पदै ॥  
अनपुरना में दाता दीन रहै । रहनी गहनी सम साम गहै ॥

मुनि दरशन को नित आवत जू । चरनोदक लै घर जावत जू ॥  
 पहिचानि सुप्रीति मुनी तिनकी । सुचि टेक विवेक समीचिन की ॥  
 तिनके हित ही बहिरांय मुनी । दैके दरसन भितरांय पुनी ॥  
 सब दरसक बृंद चवाव करै । मुनि पै पछपात को दोष धरै ॥  
 दिन एक परोच्छा लीन मुनी । बहिराये नहीं सोइ भाव गुनी ॥  
 तन तीनिउ ता छिन त्यागि किये । चरनोदक जीवन दान दिये ॥  
 दो०—सोरह सै उनहत्तरो, माधव सित तिथि थीर ।

पूरन आयू पाइकै, टोडर तजै सरार ॥ ८७ ॥

मीत त्रिरह में तीन दिन, दुषित भये मुनि धार ।

समुझि समुझि गुन मीत के, भरयो बिलोचन नार ॥ ८८ ॥

पांच मास बीते परे, तेरस सुदी कुआर ।

जुग सुत टोडर बीच मुनि, बांटी दिये घर बार ॥ ८९ ॥

नप-सिप कर्ता आसु कवि, भीषमसिंह कनगोय ।

आयो मुनि दरसन कियो, त्यागेउ तन हरि जोय ॥ ९० ॥

गंग कहेउ हाथी कवन, माला जपेउ सुजान ।

कठमलिया बंचक भगत, कहि सो गयो रिसान ॥ ९१ ॥

छमा किये नहिं स्यापदिय, रंगे सांति रस रंग ।

मारग में हाथी कियो, झपटि गंगतन भंग ॥ ९२ ॥

कवि रहाम बरवै रचै, पठये मुनिवर पास ।

लपि तेइ सुंदर छंद में, रचना कियो प्रकास ॥ ९३ ॥

मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय ।

मुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावै सब कोय ॥ ९४ ॥

बाहु पीर व्याकुल भये, बाहुक रचे सुधीर ।  
 पुनि बिराग संदीपनी, रामाज्ञा सकुनीर ॥ ९५ ॥  
 पूर्व रचित लघु ग्रंथननि, दोहराये मुनि धीर ।  
 लिपवाये सत्र आन ते, भो अति छान सरौर ॥ ९६ ॥  
 जहांगीर आयो तहां, सत्तर संवत वीत ।  
 धन धरती दीवो चहै, गहे न गुनि त्रिपरीत ॥ ९७ ॥  
 त्रिरवल की चर्चा भई, जो पट्टु वागविलास ।  
 बुद्धि पाइ नहिं हरि भजे, मुनि किय पेद प्रकास ॥ ९८ ॥  
 अवधपुरी को चोहडा, है अवधवासि प्रियजानि ।  
 हृदय लगाये प्रेमबस, रामरूप तेहि मानि ॥ ९९ ॥  
 सिद्ध वृंद गिरिनार के, नभ ते उतरे आय ।  
 करि दरसन पुलकित भये, प्रसन्न किये सतिभाय ॥ १०० ॥

सो०—तुमहिं न व्यापै काम, अति कराल कारन कवन ।  
 कहिय तात सुपधाम, जोग प्रभाव कि भगति बल ॥ १९ ॥

दो०—जोग न भगति न ग्यान बल, केवल नाम अधार ।  
 मुनि उत्तर सुनि मुदित मन, सिद्ध गये गिरिनार ॥ १०१ ॥  
 बैठि रहे सुनि घाट पर, जुरै लोग बहुताय ।  
 आयो भाट सुचंद्रमनि, त्रिनय कियो परि पाय ॥ १०२ ॥

### सवैयां

पन दोइक भोग विषय अरुज्ञान अब जोरह्यो सो न पसाइयजू ।  
 अब लौ सब इंद्रिन लोग हंस्यो अबतो जनि नाथ हंसाइयजू ॥

मद मोह महा पल काम अनी मम मानस ते निकसाइय जू ।  
रंघुनंदन के पद के सदके, तुलसी मोहि कासि बसाइय जू ॥ १ ॥

दो०—त्रिनय सुनत पुलकित भये, कहि रिपिराज महान ।

बसहु सुपेन इतै सदा, करहु राम गुन गान ॥१०३॥

हत्यारा दिग आयऊ, त्रिप्र चंद तिसु नाम ।

दूर ठाढ़ बोलत भयो, राम राम पुनि राम ॥१०४॥

इष्ट नाम सुनि मगन भे, तुरत लिये उर लय ।

आदर जुत भोजन दिये, हरपि कहे रिपिराय ॥१०५॥

तुलसी जाके मुपनि ते, धोपेहु निकसे राम ।

ताके पग की पैतरी, मोंरे तन को चाम ॥१०६॥

समाचार व्याप्यो तुरत, बांधिन बांधिन मांझ ।

ग्यानी ध्यानी त्रिप्र भट, सुधी जुरै भइ सांझ ॥१०७॥

कैसे घातक सुद्ध भो, कहिये संत महान ।

कहे जु नाम प्रताप ते, बांचहु वेद पुरान ॥१०८॥

कशैं लिप्यौ तौ है सही, होत न पै विस्वास ।

मन माने जाते कहिय, सोइ कर्त्तव्य प्रकास ॥१०९॥

कहे जो सिव को नादिया, गहै तास कर ग्रास ।

तत्र तो निश्चय उपजही, सबके मन विस्वास ॥११०॥

मुनि प्रसाद ऐसहि भयो, चहुं दिसि जयजयकार ।

निदक मांगे छमा सव, पग परि बारंबार ॥१११॥

राम नाम दिन भर रटैं, लोभ विवस मुनि धान ।

साँझ समय तेहि त्रिप्र कहैं, द्रव्य देत छुनान ॥११२॥

राम दरस हित कमलभव, हठेउ कहेउ मुनिराय ।  
 तरु ते कूदि त्रिसूल पै, दरस लेहु किन जाय ॥११३॥  
 गाढ़ि सूल अरु त्रिटप चढ़ि, हिम्मत हारेउ पात ।  
 लषेउ पछाहीं वीर इक, अख चढ़े मग जात ॥११४॥  
 पूछेउ मर्म कहेउ कथा, सो चढ़ि त्रिटप तुरंत ।  
 कूदेउ उर बिस्वास धरि, दीन दरस भगवंत ॥११५॥  
 अंत समय हनुमत दिये, तत्त्व ग्यान को बोध ।  
 राम नाम ही बीज है, सृष्टि बृच्छमय ग्रोध ॥११६॥  
 पर प्रस्थान की सुभ वड़ी, आयो निकट बिचारि ।  
 कहेउ प्रचारि मुनीस तब, आपन दसा निहारि ॥११७॥  
 रामचंद्र जस बरनि कै, भयो चहत अब मौन ।  
 तुलसी के मुष दीजिये, अब ही तुलसी सोन ॥११८॥  
 संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर ।  
 सावन स्यामा तीज सनि, तुलसी तज्यो सरिर ॥११९॥  
 मूल गोसाईं चरित नित, पाठ करै जो कोयं ।  
 गौरी सिव हनुमत कृपा, राम परायन होय ॥१२०॥  
 सोरह सै सत्तासि सित, नवमी कातिक मास ।  
 बिरच्यो यहि निज पाठ हित, बेनीमाधवदास ॥१२१॥

इति श्रीवेणीमाधवदांसकृत मूल गोसाईंचरित समाप्त ॥  
 श्रीसूगण्डिल्यगोत्रोत्पन्नपंक्तिपावनत्रिपाठीरामरक्षमाणिरामदासेन  
 तदात्मजेन च लिखितम् ।

मिति विजयादशमी संवत् १८४८ भृगुवासरै ।

श्रीदरिः

← गीताप्रेस, गोरखपुर →

की

पुस्तकोंकी संक्षिप्त

सूची

माघ १९९०

- (१) पुस्तकोंका विशेष विस्तार तथा पूरा नियम जाननेके लिये वडा मूर्त्तीपत्र मुफ्त भेगाइये ।
- (२) हमारे यहाँ अनेक प्रकारके धार्मिक छोटे, बड़े, रंगीन और सदि चित्र मिलते हैं । विशेष जानकारीके लिये चित्र-मूचा भेगाइये ।

(1) हर एक पत्रम म: पता, डाकघर, जिला बहुत साफ देवनागरी अक्षरोंमें लिखें। नहीं तो जवाब देने या माल भेजनेमें बहुत दिक्कत होगी। साथ ही उत्तरके लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिये।

(2) अगर ज्यादा किताबें मालगाड़ी या पार्सलसे मँगानी हों तो रेलवे-स्टेशनका नाम जरूर लिखना चाहिये।

(3) थोड़ी पुस्तकोंपर डाकखर्च अधिक पड़ जानेके भयसे एक रुपयेसे कमकी वी० पी० प्रायः नहीं भेजी जाती; इससे कमकी किताबोंकी कीमत, डाकमहसूल और रजिस्ट्री-खर्च जोड़कर टिकट भेजें।

(4) एक रुपयेसे कमकी पुस्तकें बुकपोस्टसे मँगवानेवाले (सज्जन) तथा रजिस्ट्रीसे मँगवानेवाले (=) (पुस्तकोंके मूल्यसे) अधिक भेजें। बुकपोस्टका पैकेट प्रायः गुम हो जाया करता है; अतः इस प्रकार खोयी हुई पुस्तकोंके लिये हम जिम्मेवार नहीं हैं।

### कमीशन-नियम

१) से कमकी पुस्तकोंपर कमीशन नहीं दिया जाता। २) से ५) तक ६) सैकड़ा, ५) से १०) तक १२½) सैकड़ा, फिर २५) तक १८) सैकड़ा, इससे ऊपर २५) सैकड़ा दिया जाता है।

३०)की पुस्तकें होनेसे ग्राहकको रेलवे-स्टेशनपर मालगाड़ीसे फ्री डिलेवरी दी जायगी। परन्तु सभी प्रकारकी पुस्तकें लेनी होंगी, केवल गीता नहीं। दीपावलीसे दीपावलीतक १०००) नेटकी पुस्तकें सीधे आर्डर भेजकर लेनेवालोंको ३) सैकड़ा कमीशन और दिया जायगा। जल्दीके कारण रेलपार्सलसे मँगवानेपर आधा भाड़ा दिया जायगा। इससे अधिक कमीशनके लिये लिखा-पढ़ी न करें।

## गीताप्रेसकी पुस्तकें

श्रीमद्भगवद्गीता—[ श्रीशांकरभाष्यका सरल हिन्दी-अनुवाद] इसमें मूल भाष्य है और भाष्यके सामने ही अर्थ लिखकर पढ़ने और समझनेमें सुगमता कर दी गयी है। श्रुति, स्मृति, इतिहासोंके प्रमाणोंका सरल अर्थ दिया गया है। पृष्ठ ५०४, ३ चित्र, मू० साधारण जिल्द २॥), बड़िया जिल्द ... २॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—मूल, पदच्छेद, अन्वय, साधारण भाषाटीका, टिप्पणी, प्रधान और सूक्ष्म विषय एवं त्यागसे भगवत्प्राप्तिसहित, मोटा टाइट, कपड़ेकी जिल्द, पृष्ठ ५७०, बहुरंगी ४ चित्र १॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—गुजरानी-टीका, गीता नक्शर दोकी तरह ... १॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—मराठी-टीका, हिन्दीकी १॥ वालीके समान, मूल्य १॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—प्रायः सभी विषय १॥ वालीके समान, विशिष्टता यह है कि श्लोकोंके सिरेपर भाषार्थ छपा हुआ है, साइज और शब्द कुछ छोटे, पृष्ठ ४३८, मूल्य ॥३), तजिल्द ... ॥३=)

श्रीमद्भगवद्गीता—अंगला-टीका, गीता नं० ५ की तरह। मू० १), स० ... १॥)

श्रीमद्भगवद्गीता—श्लोक, साधारण भाषाटीका, टिप्पणी, प्रधान विषय और त्यागसे भगवत्प्राप्ति नामक निबन्धसहित। साइज प्रथमोला, मोटा टाइट, ३१६ पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मू० १॥), स० ... ॥३=)

गीता—मूल, मोटे अक्षरवाली, सचित्र, मूल्य १-), सजिल्द ... ॥३=)

गीता—साधारण भाषाटीका, पाकेट-साइज, सभी विषय ॥ वालीके समान, सचित्र, पृष्ठ ३२२, मूल्य २=)॥ सजिल्द ... ॥३=)

गीता—भाषा, इसमें श्लोक नहीं हैं। अक्षर मोटे हैं, १ चित्र, मू० १), स० ॥३=)

गीता—मूल ताबीजी, साइज २ x २॥ इञ्च, सजिल्द ... २=)

गीता—मूल, विष्णुसहस्रनामसहित, सचित्र और सजिल्द ... २=)

गीता—७॥ x १० इञ्च साइजके दो पत्रोंमें सम्पूर्ण ... २=)

गीता-सूची (Gita-List) अनुमान २००० गीताओंका परिचय ॥)

श्रीश्रीविष्णुपुराण—हिन्दी-अनुवादसहित, आठ सुन्दर चित्र, एक तरफ श्लोक और उनके सामने ही अर्थ है, साइज २२x२९ आठ पेजी, पृष्ठ-संख्या ५४८, मूल्य साधारण जिल्द २॥), कपड़ेकी जिल्द ... २॥)

अध्यात्मशास्त्र—सटीक, आठ चित्रोंसे सुशोभित—एक तरफ श्लोक और उनके सामने ही अर्थ है, हाकहीमें प्रकाशित हुआ है, जधरी नहीं लेनेवालों को दूसरा संस्करण लगनेतक उद्धरण देना। मू० १॥३), सजिल्द ... २=)

पना—गीताप्रेस, मोरसपुर



श्रीभ्रम-योग-सचित्र, लेखक-श्रीविद्योगी हरिजी, पृष्ठ ४२०, बहुत मोटा  
एचिटक कागज, मूल्य अजित्द १।), सजित्द ... १।)

श्रीकृष्ण-विज्ञान-अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीताका मूलसहित हिन्दी-प्रधा-  
नुवाद, गीताके श्लोकोंके ठीक सामने ही कवितामें अनुवाद  
छपा है। दो चित्र, पृष्ठ २७५, मोटा कागज, मू० ॥।), स० १)

विनय-पत्रिका-सरल हिन्दी-भावार्थ-सहित, ६ चित्र, अनुवादक-  
श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, मू० १), सजित्द ... १।)

भगवतरत्न प्रह्लाद-३ रङ्गीन, ५ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ ३४०, मोटे  
अक्षर, सुन्दर छपाई, मूल्य १) सजित्द ... १।)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली (खण्ड १)-सचित्र, श्रीचैतन्यदेवकी बड़ी  
जीवनी। पृष्ठ ३६० मू० ॥।=), सजित्द १=)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली (खण्ड २)-सचित्र, अभी छपी है।  
अवश्य देखें। पृष्ठ ४५०, मूल्य १=), सजित्द १।=)

श्रीमद्भागवतान्तर्गत एकादश स्कन्ध-सचित्र, सटीक, पृष्ठ ४२०,  
मूल्य केवल ॥।) सजित्द ... १)

देवर्षि नारद-२ रंगीन, ३ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ २४०, सुन्दर  
छपाई, मूल्य ॥।), सजित्द ... १)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग १-सचित्र, लेखक-श्रीजयदयालजी गौयन्दका,  
यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। इसके मननसे धर्ममें श्रद्धा,  
भगवान्में प्रेम और विश्वास एवं नित्यके वर्तवमें सत्य  
व्यवहार और सबसे प्रेम, अत्यन्त आनन्द एवं शान्तिकी  
प्राप्ति होती है। पृष्ठ ३५०, मूल्य ॥=), सजित्द ... ॥।=)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग २-सचित्र, लोक और परलोकके सुख-साधनकी  
राह बतानेवाले सुविचारपूर्ण सुन्दर-सुन्दर लेखोंका अति उत्तम  
संग्रह है। ६०० से ऊपर पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य प्रचारार्थ केवल ॥।=)  
रक्खा गया है। यह अभी छपी है। एक पुस्तक अवश्य संग्रह करें।

नैवेद्य-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके २२ लेख और ६ कविताओंका  
सचित्र नया सुन्दर ग्रन्थ, पृ० ३५०, मू० ॥।=), स० ... ॥।=)

श्रीज्ञानेश्वर-चरित्र-इक्षिणके अत्यन्त प्रसिद्ध, सबसे अधिक प्रभाव-

३-१ दुवारा छपनेपर मिल सकेगा।

पता-गीताप्रेस, गोरखपुर

दाली भक्त, 'श्रीगणेशाय नमः' के नामों की शीघ्रप्रार्थना की  
 जीवनी और उनके उद्देश्यों का गच्छता । पृष्ठ १२ अक्षर  
 पं० । सचित्र, पृष्ठ २२२, न० ... ॥१॥

विष्णुसहस्रनाम-शान्तराज्य हिन्दू-द्वारा लिखित, श्रीगणेश-आत्मके हासने  
 की उसका अर्थ ज्ञाता गया है । निरय-पाठके लोकोक्ति सत्यके अधिक  
 प्रकार विष्णुसहस्रनामका ही है । भगवान्‌के नामोंके रहस्य  
 ज्ञानके लिये यह सर्व प्रथमोपदेश है । मुख्य ॥२॥ बहुत सुखदायक  
 है । अर्थ ज्ञानके प्राप्त करनेके लिए अति आनन्ददायक है ।

श्रुति-रत्नावली-लेखक-श्यामोजी श्रीभारतवावाजी, गाल-वास  
 श्रुतिशास्त्रोंका अर्थसहित संग्रह; पृष्ठ पंजमें मूल श्रुतियाँ और  
 उसके नामनेके पंजमें उनके अर्थ रखे गये हैं, मू० ॥१॥

तुलसी-दत्त-लेखक-श्रीरामानन्दप्रसादजी पौडर, इसमें छोट्टे-बड़,  
 श्री-पद, आग्नि-व-नास्तिक, विद्वान्-मूर्त, भक्त-ज्ञानी, गुरुद्वी-  
 प्यासी, कला और गार्हस्थ्य-भेदी सबके लिये दुःख-न-दुःख  
 उन्नतिकाम मार्ग मिल सकता है । पृष्ठ २६३, सचित्र, मू० ॥१॥, स० ॥३॥

दीपकताम्र-चरित्र-ले०-हरिभक्तिपराचरण पं० लक्ष्मण रामचन्द्र  
 पांयादकर, भाषान्तरकार-पं० श्रीरामप्रसादरायण राई । हिन्दी-  
 में प्रथम मद्रासराजकी जीवनी अर्थात्‌कनहीं उन्नी, मुख्य ... ॥१॥

द्विजन्म-सं०-सचित्र उद्योगसे सोनेतक करने-योग्य प्राप्ति ५ बातोंका  
 वर्णन । निरय-पाठके योग्य स्तोत्र और भक्तोंके उद्देश । मुख्य ॥१॥

दिव्य-चूडामणि-(साधुनाद, सचित्र) पृ० २२३, मू० ॥३॥ स० ॥१॥

श्रीरामद्वय परमहंस-(सचित्र) दुर्गा प्रभाषण-द्वाराके जीवन और  
 ज्ञानभरे उपदेशोंका संग्रह है । पृ० २५०, मुख्य ... ॥३॥

भक्त-भारती-७ चित्र, उचितार्थ ७ अक्षरोंकी मूल्य २५०, मू० ॥३॥, स० ॥१॥

भक्त-यालक-गोविन्द, मोहन आदि बालक-भक्तोंके कथाएँ हैं, १-

भक्त-नारी-त्रिपथीमें धार्मिक भाववहावके लिये, एका उपयोगी कथाएँ हैं १-

भक्त-पञ्चरत्न-बड़ पाँच कथाओंका पुस्तक सद्गुरु-द्वाराके लिये चने कामकी है १-

आदर्श भक्त-राजा शिवि, रन्तिदेव, अग्रसीप आदिना कथाएँ, ७ चित्र, मू० १-

भक्त-चन्द्रिका-भगवान्‌के लिये भक्तोंकी सोठी-सीधी बातें, ७ चित्र, मू० १-

भक्त-सत्तरत्न-सात भक्तोंकी मनोहर गाथाएँ, ७ चित्र पृष्ठ १०६ मू० १-

भक्त-दुःख-उदे-१३. ती-पुनप सबके पढ़ने योग्य प्रेमभक्तिपूर्ण ग्रंथ १-

गीतामें भक्ति-योग (सचित्र) लेखक-श्रीविद्येशी हरिजी ... १-

परमार्थ-पञ्चावली-श्रीकण्ठपालजी गोयन्दकारके १३ कल्याणकारी  
 पत्रोंका संग्रह, पृष्ठ १४४, पश्चिम कागज, मुख्य ... १)

पता-शीताग्रेश, गोरखपुर

- माना—श्रीअरविन्दकी अंगरेजी पुस्तक (Mother) का अनुवाद, मू० १)।  
 भुतिकी टेर—(सचित्र) लेखक—स्वामीजी श्रीभोलेश्वरजी, मू० १)।  
 ज्ञानयोग—तन्त्र श्रीभवानीशंकरजी महाराजके ज्ञानयोगसम्बन्धी  
 उपदेश, पृष्ठ १२५, मूल्य ... १)।  
 राजकी झाँकी—लगभग ५० चित्र; भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी लीला-  
 भृगिके सौन्दर्य, माहात्म्य और विचित्रताओंका परिक्रमाके  
 ढङ्गसे बड़ा सुन्दर वर्णन । पढ़नेसे ब्रजयात्राका-सा आनन्द  
 आता है । मूल्य ... १)।  
 ऋषभ-पुष्प—सचित्र भावमय भजनोंकी पुस्तक, पृष्ठ ६६, मू० ३)॥, स० १)॥  
 प्रबोध-सुधाकर—(सानुवाद, सचित्र) इसमें विषयभोगोंकी तुच्छता  
 दिखाते हुए आत्मसिद्धिके उपाय बताये गये हैं, मूल्य ३)॥  
 गीता-निबन्धावली—गीताकी अनेक बातें समझनेके लिये उपयोगी  
 हैं । यह गीता-परीक्षाकी मध्यमाकी पढ़ाईमें रक्खी गयी है, मू० ३)॥  
 गानव-धनं-ले०—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, पृष्ठ ११२, मूल्य ३)।  
 साधन-पथ— " सचित्र, पृ० ७२, मू० ३)॥  
 अरोचानुभूति—मूल श्लोक और अर्थसहित सचित्र मूल्य ... ३)॥  
 अजन-साला—यह भावुक भक्तोंके बड़े कामकी चीज है, मू० ... ३)॥  
 चित्रकूटकी झाँकी (२२ चित्र) ले०—जाला सीतारामजी वी० ए० ३)।  
 अजन-संग्रह प्रथम भाग—इसमें तुलसी, सूर, कवीरके भजन हैं ... ३)।  
 अजन-संग्रह द्वितीय भाग—पृष्ठ १२६, मूल्य ... ३)।  
 अजन-संग्रह तृतीय भाग—पृ० १६०, खाँ भक्तोंके पद-संग्रह मूल्य ... ३)।  
 अजन-संग्रह चतुर्थ भाग—गुसलमान भक्तों और कवियोंके पद-संग्रह ३)।  
 स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी—( नये संस्करणमें १० पृष्ठ बढ़े हैं ) ... ३)।  
 सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय ... ३)।  
 श्रीमद्भगवद्गीताके कुछ जानने योग्य विषय ... ३)।  
 गीतोक्त सांख्ययोग और निष्काम कर्मयोग ... ३)।  
 मनुस्मृति द्वितीय अध्याय अर्थसहित ... ३)।

\* संस्करण समाप्त हो गया । कुछ बढ़ाकर फिर छपेगा

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

हनुमान-बाहुक-सचित्र, हिन्दी-जपेसहित, गोन्याभा श्रीगुलसीदासकी		
की दुई (तीठनुमानुमीकी प्रा रंता है, जल्द	...	→)॥
आनन्दकी लहरें-सचित्र, जे०-श्रीहनुमानप्रसादजी पोदार	...	→)॥
मनको बश करके उपाय-सचित्र	...	→)॥
गीताका सुथम विषय-पाकेट-साइज	...	→)॥
ईश्वर-मूग	→)॥ मूल )॥॥, स० →)॥	श्रीहरिसंकीर्तनधुग )
सस-नतावत-मू०	→)॥ रामगीता मरीक )॥॥	गीता टिप्पण
समान-सुधार	→)॥ इग्रेसमन्त्रजल )॥॥	दध्याय मरीक )
प्रथम	→)॥ सन्तोषानन्द हिन्दी-	पान-प्रलययोगदर्शन
श्रीप्रभ-नक्तिप्रकाश	→)॥ विभिन्नहित )॥	मूल )॥
भागवान् क्या है ?	→)॥ क्लिपैरवदेवप्रिय )॥	धर्म क्या है ? )॥
थाचार्यके सदुपाय	→)॥ परमोत्तरा मरीक )॥	विषय मन्त्र )॥
एकमन्त्रका प्रयुक्त	→)॥ देवदेव मरीक )॥	लंछन पाप धाधा प्रेता
स्यायमे भगवत्प्राप्ति	→)॥ मानव मरीक )॥	मज्जलगीता आभा पैसा
विद्युत्-मन्त्रका	→)॥	

५१ - शीताप्रसन्न, गोरखपुर

### कल्याण

भागे, जग, वेगएव और सदानाररात्रन्धी सचित्र धार्मिक मासिक  
पत्र, चाणिक नूलन ४३-)

### कुछ विशेषांक

रामायण	→)॥ १२२, निर्दे-उ-करंगे १२० चित्र मू० २॥३), स० ३३)
अथवृत्तामा	→)॥ १०, संग-द्विर्गं ४१ चित्र, मूल्य ॥३), स० १३)
भक्तानु-व.	→)॥ श्रीक पुरी कादम्बसहित, मू० ४३), सजिल्द ४॥३)
ईश्वरद्वन्द्वानु-व.	→)॥ श्रीक पुरी कादम्बसहित मू० ४३)
सजिल्द	→)॥ ... ११-)
गोविन्द मन्त्र	→)॥ ... ३१६, चित्र २५७, मू० ३), स० ३॥)
(इतने मन्त्र नहीं है, एक-महसूक्त हमारा)	

व्यनस्थापक—कल्याण, गोरखपुर

# चित्र

## छोटे, बड़े, रंगीन और सादे धार्मिक चित्र

श्रीकृष्ण, श्रीराम, श्रीविष्णु और श्रीशिवके दिव्य दर्शन ।

जिसको देखकर हमें भगवान् याद आवें, वह वस्तु हमारे लिये संग्रहणीय है । किसी भी उपायसे हमें भगवान् सदा स्मरण होते रहें तो हमारा धन्यभाग हो । भक्तों और भगवान्के स्वरूप एवं उनकी मधुर मोहिनी लीलाओंके सुन्दर दृश्य-चित्र हमारे सामने रहें तो उन्हें देखकर थोड़ी देरके लिये हमारा मन भगवत्स्मरणमें लग जाता है और हम सांसारिक पाप-तापोंको भूल जाते हैं ।

ये सुन्दर चित्र किसी अंशमें इस उद्देश्यको पूर्ण कर सकते हैं । इनका संग्रहकर प्रेमसे जहाँ आपकी दृष्टि नित्य पड़ती हो, वहाँ घरमें, बैठकमें और मन्दिरोंमें लगाइये एवं चित्रोंके वहाने भगवान्को यादकर अपने मन-प्राणको प्रफुल्लित कीजिये । भगवान्की मोहिनी मूर्तिका ध्यान कीजिये ।

कागजका साइज १० इंच चौड़ा, १५ इंच लम्बा, सुनहरी चित्रका -)II, रंगीन चित्रका मूल्य -), दोरंगके और सादे चित्रका मूल्य )III, यह छोटे प्लाकोंसे ही बेल ( वाडर ) लगाकर बड़े कागजों पर छापे गये हैं ।

कागजोंका साइज ७II X १० इंच, सुनहरीका मूल्य -), रंगीनका मूल्य )III, सादेका )II मात्र ।

इनके सिवा १८ X २३, १५ X २० और ५ X ७II के बड़े और छोटे चित्र भी मिलते हैं ।

दूकानदार और थोक-खरीदारोंको कमीशन भी दिया जाता है ।  
चित्रोंकी सूची अलग सुपत भेजाइये ।

पता-गीताप्रेस, गोरखपुर

## सुन्दर, सचित्र कवितामय पुस्तकें

- विनय-पत्रिका-गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीके ग्रन्थकी सरल हिन्दी-टीका, नवीन संस्करण । इस चार पाठका संशोधन विशेष-रूपसे किया गया है । भावार्थमें अनेक आवश्यक संशोधन करनेके अतिरिक्त कठिन स्थलोंको समझनेके लिये परिशिष्टके ३७ पृष्ठ और जोड़ दिये गये हैं । ६ चित्र हैं, दाम १) सजिल्द ... १।)
- श्रीकृष्ण-विज्ञान-अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीताका मूलसहित हिन्दी-पद्यानुवाद । दो चित्र, पृष्ठ २७५, मोटा कागज, मू० ॥१) स० १)
- भक्त-भारती-७ चित्र, कवितामें ७ भक्तोंकी सरल, सुबोध कथाएँ, मू० ॥३) स० ... .. ॥=)
- श्रुतिकी टेर ( सचित्र ) लेखक-स्वामीजी श्रीमोलेवावाजी, मू० १)
- वेदान्त-छन्दावली ( सचित्र ) ,, मू० २)॥
- मनन-माला ( सचित्र ) भावुक भक्तोंके फामकी चीज है, मू० २)॥
- भजन-संग्रह प्रथम भाग-इसमें तुलसीदासजी, सूरदासजी और कबीरजीके भजन हैं । मू० २)
- ,, दूसरा ,, -पृष्ठ १८९; वजके भक्तोंके भजन मू० २)
- ,, तीसरा ,, -पृष्ठ १६०; स्त्री-भक्तोंके पदोंका संग्रह । मू० २)
- ,, चौथा ,, -मुसलमान भक्तों और कवियोंके पद-संग्रह । मू० ... .. २)
- ,, पाँचवाँ ,, -(पत्र-पुष्प) छप रहा है ।
- हनुमानचाहुक-सचित्र, हिन्दी-अर्थ-सहित, गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीकी की हुई श्रीहनुमान्जीकी प्रार्थना है । मू० ... -)॥

यद्वा सूचीपत्र मुफ्त भेगाद्ये ।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर ।

